हिन्दी विभाग
डा गीता कुमारी

BA-II IV Paper

Date 10.11.2020
Time - 11.40 to 1.20 pm

विषय - कहानी
एक गौ

कहानी का सारांश

एक गौ कहानी जैनेन्द्र कुमार जी द्वारा लिखी गयी एक प्रसिद्ध कहानी है। प्रस्तुत कहानी में अपने गाय के प्रति हीरासिंह की ममता और प्रेम को दर्शाया है। हीरा सिंह हरियाणा के किसी जमींदार परिवार का ~~सं~~ संभ्रांत और दयालु व्यक्ति है। परन्तु वह आर्थिक संकट से गुजरने के कारण रहे हैं और उनके पास एकमात्र सम्पत्ति सुन्दरिया गाय रह गयी है। इसे अपने बड़े बेटे के विरोध के कारण बेच नहीं सकते हैं। परन्तु नौकरी की तलाश में वह दिल्ली पहुँच जाते हैं वहाँ उन्हें चौकीदारी की नौकरी मिल जाती है।

एक दिन सेठ हरियाणा की कोई गाय खरीदने की बात हीरा सिंह से करता है। वह अपनी गाय की प्रशंसा कर बैठा

Scanned with CamScanner

है। ~~वह अपनी गाय को~~ परन्तु अपने पुत्र के विरोध की बात करता है कि वह बेचने के लिए तैयार नहीं होगा। परन्तु उसके मन मे यह भी विचार आता है कि यदि वह अपनी गाय सेठ के यहाँ बेच देगा तो कम से कम अपनी आखो के सामने उसे देख सकेगा। किसी तरह अपने बेटे को समझा-बुझाकर वह अपनी गाय सेठ के यहाँ ले जाता है। हीरा सिंह ने सुन्दरिया को स्वयं चारा दिया परन्तु दुःख की बात हुई कि सेठ ने उसी दिन गाय को अपनी घोसी को सौंप दिया। गाय हीरा सिंह को छोड़कर जाना नहीं चाहती थी। हीरा सिंह ने गाय की सेवा करने की स्वयं इच्छा व्यक्त की परन्तु सेठ नहीं माना।

Scanned with CamScanner

हीरा सिंह ने कारुणिक स्वर में कहा "जाओ बहिनी जाओ" परन्तु उसका हृदय ~~मन~~ ग्लानि तथा विषाद से रो उठा और गाय ने विषाद भरा मुँह उठाकर मानो ऐसा कहा कि क्या तुम कहते हो कि मैं जाऊ ? हीरा सिंह ने उस (गाय की) मूक वाणी को समझा, उसने प्यार भरी आवाज में गाय को थपथपाते हुए जाने की विनती की और गाय सचमुच रोती हुई चली गयी। हीरा सिंह का हृदय ग्लानि और विषाद से भर उठा।

दूसरे दिन गाय 15 सेर के स्थान पर 5 सेर दूध भी नहीं देती है। हीरा सिंह गाय के पास जाकर रो-रोकर अपनी व्यथा सुनाता है।

Scanned with CamScanner

Date
Page

और कहता है कि बहिन तू उसे इतना बेआबरू और रुसवा न कर।
वह दूध दुही गयी उस गाय से पुनः 13 सेर दूध निकाल कर देता है गाय किसी प्रकार दूसरे के हाथ से दूध देना नहीं चाहती थी। सेठ उसे भला बुरा कहकर रुपयों को वापस करने की बात करता है परन्तु उसके पास अब ~~रुप~~ रुपये कहाँ थे?
रुपये रखने के होते तो वह अपनी सुन्दरिया को बेचता ही क्यों?
एक दिन ड्योढी पर दूध को फैला हुआ देखकर लोगों को शंका होती है। हीरा सिंह पर चोरी का आरोप लगता है। गाय के व्यवहार ने सिद्ध कर दिया था।

कि प्रयत्न करके भी कोई दूध नहीं उतार सकेगा। हीरा सिंह सब समझ जाता है। अन्त में दो सौ पचास रुपये का तावान देने को तैयार होकर हीरा सिंह सुन्दरिया को अपने गाँव भेज देता है।

Scanned with CamScanner